Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2022 3(2), 1106–1109

DEFINITION OF THE DISTORTED MENTALITY OR PSYCHOLOGY OF WOMEN IN THE STORIES OF NASIRA SHARMA

नासिरा शर्मा की कहानियों में नारी की विकृत मनोवृतियां या मानसिकता की परिभाषा

P. Jayashree [1], L. Tillai Selvi [2]

[1] Researcher, Hindi Department, Annamalai University, Annamalai Nagar, Tamil Nadu, India
[2] Acharya, Hindi Department, Annamalai University, Annamalai Nagar, Tamil Nadu, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v3.i2.2022.4349

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2022 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: There has been a lot of change in the status of women in independent India. Nowadays women are progressing in the field of politics, society, economy, culture, science and education. Women played an important role in the freedom struggle. After independence, women came out of the house and contributed to the development of the country. Changes in the status of women after independence:

- Women are no longer confined to the four walls of the house.
- The main purpose of women's work is to earn money and use time properly.
- Women are developing mentally and physically.
- Women are also gaining equal rights with men in the economic field.

Hindi: आज़ाद भारत में महिलाओं की स्थिति में काफ़ी बदलाव आया है। आजकल महिलाएं राजनीति, समाज अर्थव्यवस्था संस्कृति विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने अहम भूमिका निभाई थी। आज़ादी के बाद महिलाओं ने घर से बाहर निकलकर देश के विकास में योगदान दिये । आज़ादी के बाद महिलाओं की स्थिति में आए बदलाव:

- महिलाएं अब घर की चार दीवारों तक सीमित नहीं रहतीं.
- महिलाओं का काम करने का मुख्य उद्देश्य धनोपार्जन और समय का सही इस्तेमाल करना ।
- महिलाएं मानसिक और शारीरिक रूप से विकसित हो रही हैं.
- महिलाएं आर्थिक क्षेत्र में भी पुरुषों के बराबर समानता का अधिकार हासिल कर रही हैं. ।

1. प्रस्तावना

आज़ाद भारत में महिलाओं की स्थिति में काफ़ी बदलाव आया है। आजकल महिलाएं राजनीति, समाज अर्थव्यवस्था संस्कृति विज्ञान और शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने अहम भूमिका निभाई थी। आज़ादी के बाद महिलाओं ने घर से बाहर निकलकर देश के विकास में योगदान दिये । आज़ादी के बाद महिलाओं की स्थिति में आए बदलाव:

- महिलाएं अब घर की चार दीवारों तक सीमित नहीं रहतीं.
- महिलाओं का काम करने का मुख्य उद्देश्य धनोपार्जन और समय का सही इस्तेमाल करना ।
- महिलाएं मानसिक और शारीरिक रूप से विकसित हो रही हैं.
- महिलाएं आर्थिक क्षेत्र में भी पुरुषों के बराबर समानता का अधिकार हासिल कर रही हैं. ।

हिन्दी साहित्य के समकालीन लेखकों में महिला रचनाकारों की रचनाएं स्त्री-चेतना से अछूती नहीं रही। इन महिला रचनाकारों के बहुतायत उपन्यास महिला-प्रधान रहे या उनकी परिस्थितियों से रूबरू होते रहे। इन्हीं समकालीन रचनाकारों में एक शक्सियत हैं- नासिरा शर्मा। नासिरा शर्मा ने अपने कथा साहित्य में न केवल स्त्री समस्याओं का उल्लेख किया है अपितु समाधान भी प्रस्तुत किया है।

नारी की भावनाओं की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति से नासिरा जी ने समाज में नारी के अस्तित्व को अस्मिता प्रदान की। नारी जीवन की तमाम जटिलताओं ने उनकी लेखनी को संस्कार प्रदान किया। इनके कथा साहित्य में स्त्रियां के अनेक मुद्दों पर खुली चर्चा हुई है। वे आधुनिकता के नाम पर स्त्री स्वच्छंदता की पक्षधर नहीं हैं। इनकी कहानियाँ मध्यम वर्ग की उस नारी की है जो नारी-त्रासदी एवं विकृत मनोवृतियां व मानसिकताओं के बीच जीती है। इनके कथा साहित्य में स्त्री की भावनाओं और संवेदनाओं का इतना मार्मिक चित्रण है कि पाठक वर्ग कहानियां के पात्रों में स्वयं की झलक देखता है।

नारी की भावनाओं की प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति से नासिरा जी ने समाज में नारी के अस्तित्व को अस्मिता प्रदान की। नारी जीवन की तमाम जटिलताओं ने उनकी लेखनी को संस्कार प्रदान किया। इनके कथा साहित्य में स्त्रियां के अनेक मुद्दों पर खुली चर्चा हुई है। वे आधुनिकता के नाम पर स्त्री स्वच्छंदता की पक्षधर नहीं हैं। इसलिये उनकी नारी मात्र आधुनिक होकर भी उच्छृंखल नहीं हैं। नासिरा शर्मा के अब तक नौ कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। वे है पत्थर गली इब्ने- मरियम संगसार सबीना के चालीस चोर खुदा की वापसी इंसानी नस्ल दूसरा ताजमहल बुतख़ाना शमी कागज़

पत्थरगली नासिरा जी का पंसदीदा कहानी है। पत्थरगली कहानी की मुख्य पात्र फरीदा है। लेकिन पत्थरगली कहानी फरीदा की नहीं बल्कि उस समाज की है जो रंग-बिरंगे होते हुये भी एक जैसी समस्या से जूझ रहा है। उसकी सारी सहेलियों के घर की यही कहानी है जिनके भाई कुछ नहीं करते हैं, जिनके बाप नहीं हैं, उनको अपनी जीविका के लिये दूसरों के सामने हथियार डालने पड़ते हैं पत्थरगली में 'फरीदा' और बड़े भाई की टकराहट पुरानी व नई सोच के साथ आपसी अहं की टकराहट थी।

इस कहानी के विषय में नासिरा जी का कहना है- "मेरी ये कहानियाँ दु:ख और मुजरां के सुख का मोहभंग करती हुई एक ऐसी गली की सैर कराती हैं जो पत्थर की गली है। इस पत्थर की गली में रहने वाले अपने निकास के लिये छटपटाते पत्थर से टकराकर लहूलुहान हो उठते है।

संगसार कहानी संग्रह में कई कहानियाँ ऐसी है जो स्त्री की बुनियादी अस्मिता की दास्तान है। संगसार कहानी की 'आसिया' प्रेम की पवित्रता का सच्चा नमूना है। पति के साथ बेवफाई के बावजूद उसके विवाहेत्तर प्रेम-सम्बन्ध में जुदाई है। उसे कोर्ट द्वारा संगसार करने के सजा सुनायी भी गयी है। उस रात औरतों ने चूल्हें नहीं जलाए, मर्दो ने खाना नहीं खाया, सब एक दूसरे से आँख चुराते है। यदि आसिया गुनाहगार है तो उसके संगसार होने पर यह दर्द, यह कसक उनके दिलों कों क्यों मथ रही थी।

गूंगा आसमान कहानी की मेहरअंगीज अपने लंपट लेकिन सत्तापोश पति के चंगुल से तीन जवान स्त्रियों को छुटकारा दिलवाती है। यहाँ एक स्त्री के चारित्रिक बहादुरी का सहज चित्रण हैं। दरवाज-ए-कजविन' की 'मरियम' ऐसी औरत है जो समाज की सड़ी-गली रस्मों का शिकार है। मरियम की नियति यही हैं। वह पूछती है- क्या बदलाव इसलिये चाहते थे हमारा गुनाह क्या था? क्या इस बदलाव के बावजूद स्त्री की स्थिति जस की तस है कि उसका शोषण मानसिक और शारीरिक स्तर पर लगातार होता रहे उसकी हालत कमतर बनी रहे। ये कहानी औरत की मजबूरी की त्रासद दास्तान है।

बावली कहानी का मुख्य पात्र सलमा का चित्रण पानी से भरी बावली के रूप में हुआ है। सलमा के विवाह पूर्ण जीवन अभावों और उपेक्षाओं के साथ गुज़ारा था। कहानी की पहली पंक्ति ही सलमा अपनी व्यथा का बयान करती है- मैं अपने को हमेशा से दूसरों में बैंटती आई हूँ ठीक बावली के पानी की तरह जिस किसी को प्यास लगी, मेरी वजूद की सीढ़ियाँ उतरता सीधा नीचे चला आया और अपना खाली बर्तन भरकर ले गया।"[1] खालिद के साथ शादी होने के बाद ही उसे अपने घर एवं अपने लोगों का सुख प्राप्त होता है।

विवाह के सात वर्ष बाद भी उसकी गोद नहीं भरी, तब वह सुद्धेला नामक लड़की से खालिद की शादी तय करती है। वह सोचती है बचपन छत की तलाशों में गुजरी और आज छत है तो पैर के नीचे से ज़मीन गायब हो रही है। सलमा एक तरफ अपने पति को दूसरी शादी केलिए सजा रही है और दूसरी ओर अपने अंधकारपूर्ण, अधूरी जीवन के हादसों से भरी हुई है।4

अम्मा और आपके अरमानों की तरह मेरे दिल में भी अरमान हैं कि मेरी गोद भरे। मेरे तन से न सही किसी और के तन से आपके वजूद को में अपने आगोश में लेकर प्यार कर सकूँ.... शादी के सात साल गुज़र गए। मेरी गोद न भरी। इसमें अम्मा का क्या कसूर। सुलेहा बडी प्यारी लडकी है। में खुद देखकर पसंद कर चुकी हैं। आप यूँ परेशान न हों।" नासिरा शर्मा ने मानवीय संबंन्धों को समय और समाज के संदर्भ में जाँच पड ताल की है। उनके अनुसार समाज कहीं का भी हो, इसमें जीवित लोग अपने अस्तित्व केलिए संघर्ष करते रहते हैं। कट्टर मजहबी ताकते धर्म की रक्षा के नाम पर अधार्मिक, कुकृत्य करते रहते हैं।

नमक का घर कहानी की शहरबानां अपने खोए घर और गुमशुदा परिवार की त्रासदी झेलती औरत खुदा की वापसी संग्रह की कई कहानियों में दुखियारी नायिकाएं विभिन्न कारणों से पति को छोड़कर भाई माँ पिता के घर आश्रय लेने के लिए मजबूर हो जाती है । नासिरा जी ने अपने आस-

[1] शर्मा नासिरा, किताब के बहाने, सं 2001.

पड़ोस में इस माहौल को महसूस किया और इसे अपनी लेखनी से कहानियों में उकेरा है। इस संग्रह की अधिकांश कहानियॉ विभिन्न वर्गो की स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है।

मेरा घर कहाँ कहानी में लाली धोबन की बेटी 'सोना' हो या नई हुकूमत की कहानी 'हजारा' या बचाव की नायिका 'रेहाना' हर कहानी में नारी-संघर्ष और उत्पीड़न का जीता-जागता उदाहरण मौजूद है। चार बहनें शीशमहल की कहानी में शरीफ के घर में लड़की का पैदा होना अपशगुन माना जाता है बाहर दुकान पर चूड़ी पहनाते हुये लड़की के जख्मी हाथ देख शरीफ का दिल भी जख्मी हो जाता है। जिन औरतों व लड़कियों की बदौलत उसकी जिंदगी की गाड़ी चल रही है, रोटी नसीब़ हो रही है। उसी के घर में लड़की का पैदा होना मनहूसियत की बात हैं।

बुतखाना कहानी संग्रह की कहानी अपनी कोख भ्रूण परीक्षण पर लिखी गयी कहानी है। स्त्री की स्वायत्ता, उसके वजूद व आत्मनिर्भरता की कहानी है। इसकी नायिका 'साधना' विवाह के उपरान्त दो बच्चियों की माँ बन जाती है। तीसरी बार उससे अपेक्षा की जाती है कि भ्रूण परीक्षण में यदि इस बार भी पुत्री हो तो गर्भपात करा लें। गर्भ में पुत्र होने पर भी वह यह सोचकर वह गर्भपात करा देती है कि पुत्र होने पर उसकी पुत्रियों के साथ भेदभाव बढ़ जाएगा। ये कहानी एक अनकहा सत्य है।

नासिरा जी ने औरतों की जिंदगी की एक-एक बारीकियों को उनके परिवार के सदस्य की तरह देखा, उनके भरोसे को जीता है। त्रासद पीड़ा झेलती बेबस स्त्रियाँ ममत्व भाव व आत्मीयता में जीती है, और उनसे मुक्त होने का साहस भी नहीं कर पातीं। नासिरा जी लिखती हैं- ''जिन कुरीतियों एवं परंपरा से भारत मुक्त था, वही आज की मुख्य समस्या बन चुकी हैं, जैसे बंधुआॅ मजदूरी, इत्यादि लाख कानून बने मगर उसका पालन अभी पूरी तरह नहीं हो रहा है। उसी तरह महिलाओं के प्रति बने कानून, फाइलों की शोभा अवश्य बन चुके हैं। मगर समाज का दृष्टिकोण अधिक पुरातनपंथी बन गया।

नासिरा शर्मा की कहानियों में मुख्यतः नारी के प्रति असमानताओं एवं उसके अस्तित्व की रक्षा के लिये लड़ा जा रहा अनवरत युद्ध है। इनकी कहानियॉ अपने घर की तहजीब व समाज के अंधेरे को दूर करती वे शमाएँ हैं जिसकी रोशनी इतिहास के पन्नों तक फैली हुई है। ये कहानियाँ केवल कहने सुनने तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि अतीत व वर्तमान के तारीखी दस्तावेज़ हैं जिनकों पढ़ा व समझा जा सके। इनकी कहानियाँ में 'नारी' की जिंदगी का महाकाव्य है।

नासिरा शर्मा स्त्री विमर्श की प्रमुख कथाकार हैं। स्त्री विमर्श इसलिए प्रासंगिक है कि इन्होंने महिलाओं के हितों की चर्चा करते हुए, स्त्री के बहाने मानवीय सवालों से रूबरू कराया। इनकी कहानियों में नैतिकता, ईमानदारी और तहजीब की महीन बुनावट है। इन्होंने अपनी रचनाओं में नारी मन को जबरदस्त तरीके से उकेरा है। स्त्री विमर्श को कटघरे में खड़ा करते हुए नासिरा शर्मा ने कहा कि हमारा स्त्री विर्मश समाज में दिन-रात हो रही भयावह घटनाओं को नहीं देखता है। हमारा स्त्री विमर्श देखता यह है कि हम कैसे आजाद हों। आजादी की भी एक हद होती है। मैं हर तरह से आजाद हूं। लेकिन मैंने भी अपनी एक हद तय की हुई है कि मैं कहां तक जा सकती हूं और मुझे कहां से लौटना है। स्त्री विमर्श से ज्यादा अच्छा वह है कि जिन स्त्रियों ने बदलाव के लिए जमीनी स्तर पर काम किया है, उनकी चर्चा की जाए। आप बदजुबान हो जाएं, किसी को फटकार दें, आप किसी को चांटा मार दें तो इससे कोई बहादुरी नहीं है, इससे कोई आंदोलन नहीं होने वाला। इससे समझ में आता है कि मर्दों की तरह औरतों में भी धैर्य का स्तर कम होता जा रहा है।

इनकी कहानी की नायिका रोती नहीं, अकेले में भी नहीं। वहीं प्रभा ख़ेतान की नायिका 'आओ पेपे घरे चलें' में कहती हैं- ''औरत कब रोती और कहाँ नहीं रोती। जितना वह रोती है, और उतनी ही औरत होती जाती है।''[2] दोनों की नायिकाओं में इतना फर्क है कि समाज एक अकेली किंकर्तव्यविमूढ़ औरत को रोते देखना चाहता है। नासिरा जी इस्लाम धर्म के आधार पर नारी सशक्तीकरण के साथ-साथ भारतीय मुस्लिम परिवारों की त्रासदी की कहानियों को रेखांकित करती हैं। साथ ही मुस्लिम स्त्री अधिकार के प्रत्येक पक्ष का उद्घाटन भी करती हैं।

इसलिए वह उसे तरह-तरह से रुलाता हैं। रोते चले जाने का संस्कार देता है। वहीं एक शिक्षित परिपक्व स्त्री स्वाभिमान की मनोदशा में किसी का कंधा नहीं तलाशती। समता एवं स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर अपने पैरों पर खड़ी होने का साहस करती है। उसे अपनी अस्मिता का बोध है, जिसकी रक्षा करने में वह सक्षम है। यश मालवीय के शब्दों में ''नासिरा शर्मा के कथासाहित्य में औरत आँचल में दूध और आँखों में पानी वाली औरत नहीं है। वह पितृसत्तात्मक समाज के सामने सीना तानकर खड़ी हो जाती है, प्रतिरोध के स्वर मुखरित करने लगती है। इन कहानियों को पढ़कर नींद नहीं आती बल्कि आई हुई नींद कई-कई रातों के लिए उड़ जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

शर्मा नासिरा मेरे जीवन पर किसी के हस्ताक्षर नहीं।
शर्मा नासिरा पत्थरगली राजकमल प्रकाशन दिल्ली संस्करण- 2011
शर्मा नासिरा शाल्मली किताबघर, प्रकाशन, नई दिल्ली, सं -2013
शर्मा नासिरा सात नदियॉ एक समन्दर।
शर्मा नासिरा औरत के लिए औरत सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली सं0 -2002

[2] शर्मा नासिरा, औरत के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, सं-2002.

शर्मा नासिरा किताब के बहाने सं0 2001
डॉ. राजेश कुमार गर्ग असिस्टैन्ट प्रोफेसर हिन्दी विभाग इलाहाबाद,